सम्पादकीय.....

Ref.(https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/thumb/7/70/S.R.V_Govt.College_of_Music_and_Perfoming_Arts%2C_Thrissur.jpg/800pxS.R.V_Govt.College_of_Music_and_Perfoming_Arts%2C_Thrissur.jpg)

नमस्कार....

बात शुरु करते है केरल के त्रिसुर जिले से. जून 2018 को केरल का त्रिसुर जिला संगीत की लोकतांत्रिक जीत का गवाह बना. 108 वर्ष पुराने एस. आर. वी. संगीत विद्यालय ने अपने अस्तित्व की लडाई जीत ली. त्रिसुर को केरल की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है और यहीं है केरल का सबसे पुराना और पहला संगीत विद्यालय - एस. आर. वी. संगीत विद्यालय. यह केरल का सबसे पहला संगीत विद्यालय है. 19 जुलाई 1910 में इसकी स्थापना कोचीन के महाराजा श्री राम वर्मा ने करवाई थी, जिसका उद्देश्य कोचीन के शाही परिवार की महिलाओं को संगीत सिखाना था, जिसका बाद में सरकार ने अधिग्रहण कर लिया था.

वर्ष 2012 में सरकार में 102 वर्ष पुराने इस विद्यालय को यह कह कर बंद कर दिया कि केरल के दूसरे संगीत संस्थानों में यहाँ से ज्यादा अच्छी सुविधाएँ है और विद्यार्थी वहां से अपनी उच्च संगीत शिक्षा हासिल कर सकते है. केरल में इस संगीत विद्यालय के अतिरिक्त श्री स्वाति तिरुनाल संगीत महाविद्यालय, राधा लक्ष्मी विलासम संगीत महाविद्यालय और चेम्बाई मेमोरियल संगीत महाविद्यालय भी है, जो क्रमशः राज्य सरकार के केरल विश्वविद्यालय, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय तथा कालीकट विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है.

एस. आर. वी. संगीत विद्यालय 4 अध्यापक और 60 विद्यार्थियों के साथ संगीत में सीनियर म्यूजिक सर्टिफिकेट कोर्स चलाता था, जिसे स्नातक के समकक्ष माना जाता था और जिसे पास करने के बाद विद्यार्थी किसी भी सरकारी स्कूल में आवेदन करने के लिए योग्य माना जाता था. हजारो की संख्या में यहाँ से शिक्षित

संगीत विद्यार्थी आज की तारीख़ में केरल और उसके बाहर संगीत शिक्षक के रूप में विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों में संगीत की शिक्षा दे रहे है.

एस. आर. वी. संगीत विद्यालय के बंद किये जाने के विरोध में Digital Film Makers forum ने प्रो. के. बी. उन्नीथन के नेतृत्व में 19 फरवरी 2013 को शिक्षा विभाग के कार्यालय के सामने धरना प्रदर्शन किया. प्रो. के. बी. उन्नीथन एक राजनैतिक, सामाजिक कार्यकर्त्ता और Digital Film Makers forum के मुख्य संरक्षक भी है. मलयाली फिल्म के जाने माने डायरेक्टर विद्याधरन के अतिरिक्त बड़ी संख्या में संगीत और कला जगत के कलाकार, संगीत विद्यार्थी और कई राजनेता भी इस धरने में शामिल हुए. मुख्य मंत्री, राज्य के शिक्षा मंत्री, सांसद आदि मंत्रियों को इस सम्बन्ध में एक ज्ञापन सौंपा गया साथ ही केरल के मानवाधिकार आयोग में भी एक ज्ञापन दिया गया. मानवाधिकार आयोग के न्यायाधीश आर. नादाराजन ने पत्र लिखकर सरकार को इस मुद्दे पर संज्ञान लेने को कहा. विधायक थैरमबिल रामकृष्णन ने विधान सभा में एस. आर. वी. संगीत विद्यालय के बंद किये जाने और इसके उन्नयन से सम्बंधित सवाल उठाए. शिक्षा मंत्री ने इस सम्बन्ध में सकारात्मक कदम उठाने का आश्वासन दिया और तत्काल दो लाख रूपए की आर्थिक सहायता के निर्देश भी दिए. सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने वर्ष 2015 प्रो. एम. बालासुब्रमण्यम के नेतृत्व में एक समिति का गठन कर दिया, जिसे विद्यालय के उन्नयन यानी विद्यालय से महाविद्यालय बनाने सम्बन्धी सुझाव देने थे. प्रो. एम. बालासुब्रमण्यम ने विद्यालय के उन्नयन से सम्बंधित जो सुझाव सरकार को दिए थे वह सब स्वीकार किये गए. एस. आर. वी. संगीत विद्यालय को महाविद्यालय की मान्यता देते हुए इसका नामकरण S.R.V. Government College of Music and Performing Arts कर दिया गया है. जून 2018 में कालीकट विश्वविद्यालय ने इसे Provisional affiliation देते हुए वर्ष 2018-2019 के लिए कर्नाटक संगीत, वीणा, वायलिन और मृदंगम विषयों में संगीत में स्नातक (B.A. in Music) के पाठ्यक्रम आरम्भ किये है. इस पाठ्यक्रम में 30 सीटें है, जिनमें शास्त्रीय गायन की 12 तथा वीणा, वायलिन और मृदंगम की 6-6 सीटें है. इसके अतिरिक्त कालीकट विश्वविद्यालय ने एक समिति का भी गठन किया है जो संगीत, भरतनाट्यम, और मोहिनीअट्टम नृत्य में B.P.A. (Bachelor of Performing Arts) आरम्भ किये जाने के सम्बन्ध में अपने सुझाव देगी.

संगीत की संस्थागत शिक्षा के इतिहास की यह एक अपने आप में अनूठी घटना है, जो बताती है कि इक्कीसवीं सदी का संगीत सामन्ती विचारधारा से आगे निकाल आया है और उसने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए लोकतान्त्रिक मूल्यों के सहारे लड़ना सीख लिया है.

संगीत गैलेक्सी का जुलाई अंक आप सबके सामने है. उम्मीद है यह अंक आपको बेहतरीन जानकारी देते हुए आप सबके इल्म (ज्ञान) में इज़ाफा करेगा. अतिथि संपादन के लिए डॉ. तृप्ति वाटवे का हम शुक्रिया अदा करते है. साथ ही लेखक व लेखिकाओं को इस अंक के प्रकाशन में सहयोग के लिए धन्यवाद देते है.